# गतिरोध में फंसा हुआ

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

द हिन्दू

04 अक्टूबर, 2021

**भारत एवं चीन को अन्य मुद्दों पर सहयोग करने से पहले सीमा पर सामान्य स्थिति बहाल करने की आवश्यकता है।**

आने वाले सप्ताह में भारत और चीन के सैन्य कमांडरों द्वारा एलएसी संकट से बाहर निकलने के प्रयास को जारी रखने के लिए 13वें दौर की बातचीत होने की उम्मीद है।

बीजिंग और नई दिल्ली के बीच तीव्र आदान-प्रदान ने एक रिमाइंडर के रूप में कार्य किया है कि दोनों देशों के मध्य संबंध निस्संदेह 1988 के बाद से सबसे निचले स्तर पर हैं। 24 सितंबर को, चीनी विदेश मंत्रालय ने नए सीमा प्रबंधन प्रोटोकॉल के बारे में एक सवाल का जवाब देते हुए भारत को ही पिछले साल के सीमा संकट के लिए दोषी बताया और कहा पूरी तरह से यह भारत के द्वारा किया गया "अवैध अतिक्रमण" है जो विवाद का कारण बना।

चीनी विदेश मंत्रालय ने इस आरोप को और भी मजबूत भाषा में दोहराते हुए कहा कि पिछले साल 29 सितंबर को भारत के द्वारा की गई कार्रवाइयों ने उकसाने वाले कदम के रूप में काम किया। नई दिल्ली ने बदले में बीजिंग को याद दिलाया कि यह भारत नही अपितु उसका "उकसाने वाला व्यवहार" था, और अप्रैल 2020 में वार्षिक सैन्य अभ्यास के बाद सैनिकों का जमावड़ा था, जिसके कारण फ्लैशप्वाइंट हुआ।

दोनों देशों के दूतों ने भी आभासी संवाद में बयान दिए हैं, जो संबंधों की स्थिति में एक खाई का आभास कराते हैं। भारत में चीनी दूत 'सुन वेइदॉन्ग' ने दोनों देशों से "सीमा मुद्दे को उचित स्थिति में रखने" का आह्वान किया और कहा कि "यह द्विपक्षीय संबंधों की पूरी कहानी नहीं है"।

उनके भारतीय समकक्ष, विक्रम मिश्री ने कहा कि चीनी पक्ष "गोलपोस्टों को स्थानांतरित कर रहा था" कि कैसे दोनों देशों ने तीन दशकों से सीमावर्ती क्षेत्रों को शांतिपूर्वक प्रबंधित किया है साथ ही उन्होंने कहा कि अभी तक यह सीमावर्ती क्षेत्रों के प्रबंधन और सीमा प्रश्न को हल करने के बीच "एक अच्छी तरह से समझे गए अंतर" पर आधारित था।

यह स्पष्ट है कि चार सीमा समझौतों के साथ यह समझ जो अभी तक बनी हुई थी वह अब पिछले साल चीन के द्वारा पश्चिमी क्षेत्र में लद्दाख में एलएसी को एकतरफा रूप से निर्धारित करने के कारण टूट गई है।

इस सप्ताह सैन्य कमांडरों की वार्ता हॉट स्प्रिंग्स में मौजूदा विवादों को उठाएगी, जबकि डेमचोक और देपसांग में विवाद अनसुलझे ही हैं। पिछले साल संकट के बाद से, दोनों पक्षों ने गलवान घाटी और पैंगोंग झील के उत्तरी तट पर बफर जोन स्थापित किए हुए हैं, झील के दक्षिण तट और गोगरा में विस्थापित हो गए हैं।

इस अस्थायी व्यवस्था ने संघर्षों की पुनरावृत्ति को रोकने में मदद की है, लेकिन पिछले समझौतों में अव्यवस्था के साथ, शांति बनाए रखने के लिए एक लंबी अवधि की समझ स्थापित करने में अभी भी दोनों पक्ष कोसों दूर है।

उत्तराखंड में हाल की घटनाएँ, और पूर्वी क्षेत्र में एक निरंतर सैन्य निर्माण, एक स्थायी शांति समझौते तक पहुंचने की अत्यधिक आवश्यकता को रेखांकित करता है।

श्री मिश्री ने इस गतिरोध से बाहर निकलने का एक रास्ता सुझाते हुए कहा, "ऐसा नहीं हो सकता कि केवल एक पक्ष की चिंताएं प्रासंगिक हों..." और यह स्वीकार करते हुए कि "प्रादेशिक अखंडता और राष्ट्रीय सुरक्षा की रक्षा करना दोनों पक्षों के लिए समान महत्व रखता है।" उन्होंने कहा कि दोनों पक्षों के पास अभी भी महामारी से निपटने, क्षेत्र में आतंकवाद के बारे में चिंताओं और अफगानिस्तान की स्थिति सहित मुद्दों पर सहयोग करने की जगह है।

ऐसा करने से निश्चय ही विश्वास पैदा होगा। हालाँकि, उस स्थान को ढूँढना, पहले सीमा पर सामान्य स्थिति बहाल करने पर निर्भर करेगा।

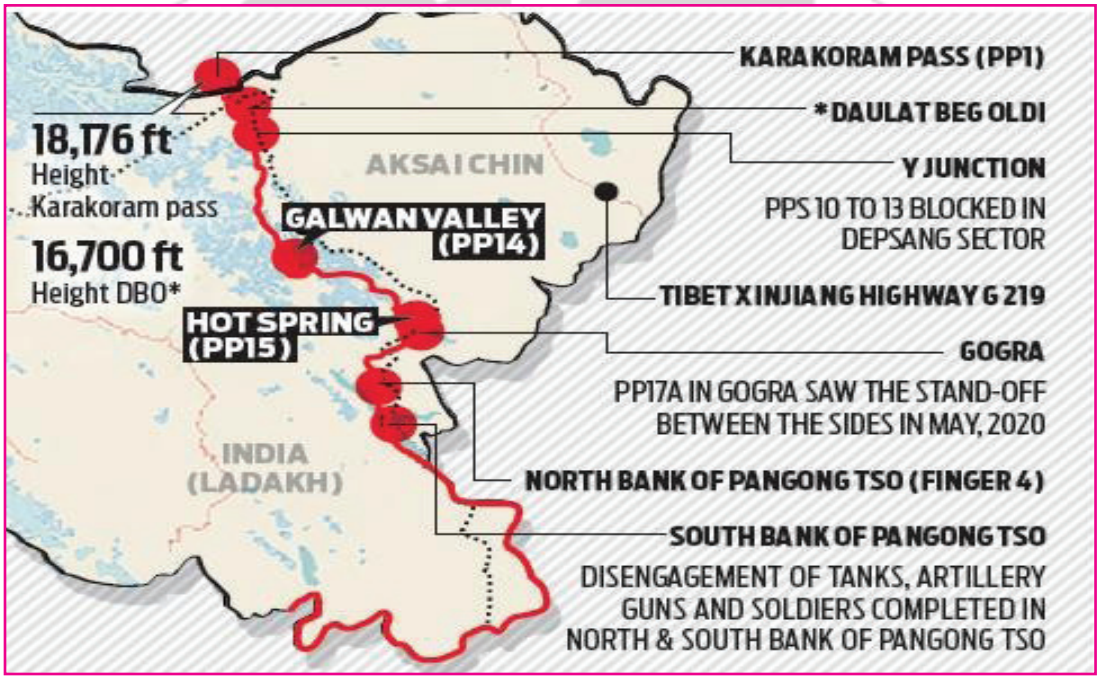

# जीएस वर्ल्ड टीम इनपुट

## *IN THE NEWS*

### भारत-चीन सीमा विवाद से जुड़े महत्वपूर्ण स्थल

- **हॉट स्प्रिंग्स और गोगरा पोस्ट** :- हॉट स्प्रिंग्स 'चांग चेनमो' (Chang Chenmo) नदी के उत्तर में है और गोगरा पोस्ट इस नदी के गलवान घाटी से दक्षिण-पूर्व दिशा से दक्षिण-पश्चिम की ओर मुड़ने पर बने हेयरपिन मोड़ (Hairpin Bend) के पूर्व में है।
- यह क्षेत्र काराकोरम श्रेणी (Karakoram Range) के उत्तर में है जो पैंगोंग त्सो (Pangong Tso) झील के उत्तर में और गलवान घाटी के दक्षिण में स्थित है।
- **पैंगोंग त्सो झील** :- पैंगोंग झील केंद्रशासित प्रदेश लद्दाख में स्थित है। यह लगभग 4,350 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है, जो विश्व की सबसे ऊँचाई पर स्थित खारे पानी की झील है।
- लगभग 160 किमी. क्षेत्र में फैली पैंगोंग झील का एक-तिहाई हिस्सा भारत में है और दो-तिहाई हिस्सा चीन में है।
- **गलवान घाटी** :- गलवान घाटी सामान्यत: उस भूमि को संदर्भित करती है, जो गलवान नदी (Galwan River) के पास मौजूद पहाड़ियों के बीच स्थित है।
- गलवान नदी का स्रोत चीन की ओर अक्साई चिन में मौजूद है और आगे चलकर यह भारत की श्योक नदी (Shyok River) में मिलती है। ध्यातव्य है कि यह घाटी पश्चिम में लद्दाख और पूर्व में अक्साई चिन के बीच स्थित है, जिसके कारण यह रणनीतिक रूप से काफी महत्त्वपूर्ण है।
- **चांग चेनमो नदी** :- यह श्योक नदी की सहायक नदी है, जो सिंधु नदी (Indus River) प्रणाली का हिस्सा है।
- यह विवादित अक्साई चिन क्षेत्र के दक्षिणी किनारे पर और पैंगोंग झील बेसिन के उत्तर में स्थित है।
- चांग चेनमो का स्रोत 'लनक दर्रे' (Lanak Pass) के पास है।

## संभावित प्रश्न ( प्रारंभिक परीक्षा )

प्र. निम्नलिखित स्थानों में से कौन-सा स्थल सबसे दक्षिण में स्थित है?

**(a)** दौलतबेग ओल्डी

**(b)** गलवान घाटी

**(c)** हॉट स्प्रिंग

**(d)** गोगरा

## Expected Questions (Prelims Exams)

**Q. Which one of the given places is located to the southmost?**

**(a)** Daulat Beg Oldie

**(b)** Galwan Valley

**(c)** Hot Spring

**(d)** Gogra

## संभावित प्रश्न ( मुख्य परीक्षा )

प्र. भारत-चीन के मध्य सीमा पर गतिरोध दोनो देशों के मध्य के व्यापारिक एवं अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के अन्य मुद्दों को भी बाधित कर रहा है। आपके अनुसार इस समस्या का क्या समाधान हो सकता है? ( 250 शब्द )

**Q. The standoff on the border between India and China is also hindering other issues of trade and international cooperation between the two countries. What according to you can be the solution for this problem? (250 Words)**

World
Committed To Excellence

नोट :- अभ्यास के लिए दिया गया मुख्य परीक्षा का प्रश्न आगामी UPSC मुख्य परीक्षा को ध्यान में रख कर बनाया गया है। अतः इस प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए आप इस आलेख के साथ-साथ इस टॉपिक से संबंधित अन्य स्त्रोतों का भी सहयोग ले सकते हैं।